# बाइबल टीचर

वर्ष 15 | जुलाई 2018 | अंक 8

## सम्पादकीय

# कलीसिया के अगुवे

परमेश्वर चाहता है कलीसिया की अगुवाई करने वाला अच्छे मन से मण्डली की देखभाल करें। पतरस ने कलीसिया के प्राचीनों से कहा था, "कि परमेश्वर के उस झुंड की जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर। और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुण्ड के लिये आदर्श बनो।" यहाँ हम देखते हैं कि पतरस अगुवों को कहता है कि अपनी सेवा आनन्द से करो तथा नीच कमाई के लिये नहीं परन्तु कलीसिया के सामने एक अच्छा नमूना बनो। (1 पतरस 5:2-3)।

पुराने नियम के समय में भी मजबूत लीडर बड़ी कठिनाई से मिलते थे और आज भी अच्छे अगुवों की बड़ी कमी है। भविष्यदूकता यिर्मयाह ने कहा था, "यरूशलेम की सड़कों में इधर-उधर दौड़कर देखो। उसके चौकों में ढूंढो यदि कोई ऐसा मिल सके जो न्याय के काम करे और सच्चाई का खोजी हो" (यिर्मयाह 5:2)। आज यदि कलीसिया को मजबूत बनना है तो हमें अच्छे मजबूत अगुवों की आवश्यकता है जो निस्वार्थ प्रभु की सेवा कर सकें। मसीह की कलीसिया को भविष्य के लिये अगुवों को तैयार करना है। और यह तभी संभव होगा जब हम अपने युवाओं को अगुवाई का अवसर देंगे। मसीह की कलीसिया की विशेषता यह है कि इसमें पास्टर सिस्टम नहीं है। तभी हम सदस्यों को बाइबल स्टडी लेने के लिये तथा आराधना में प्रभु-भोज देने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।

एक और विशेष बात हम यह देखते है कि कलीसिया के अगुवे चरवाहे की तरह होते हैं। जैसे कि एक चरवाहा अपनी भेड़ों की रखवाली करता है वैसे ही अगुवे कलीसिया की रखवाली करते हैं। बाइबल में यीशु को एक अच्छा चरवाहा बताया गया है। यीशु ने एक बार कहा था, "अच्छा चरवाहा मैं हूं; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।" (यूहन्ना 10:11)। एक ईमानदार अगुवा अपनी भेड़ों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है। एक अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों से प्रेम करता है। इसी तरह से कलीसिया के अगुवे अपने सदस्यों से प्रेम करते हैं। आज कलीसिया को ऐसे अगुवों की आवश्यकता है जो अपने सदस्यों से प्रेम करते हैं। ध्यान रखिये आप कोई ऐसा कार्य न करें जिससे कोई सदस्य झुण्ड में से बाहर चला जाये। (लूका

15:37; यूहन्ना 10:16)। अच्छे चरवाहे का मन साफ होता है तथा वह भेड़ों में कोई भेदभाव नहीं करता। जो भेड़ दुखी या जिसे चोट लगी है वह उसके साथ सहानुभूति दिखाता है। क्या आप कलीसिया में अगुवाई करते हैं? क्या कोई सदस्य आपके यहाँ मण्डली में किसी समस्या से परेशान है? उससे प्रेम करिये और उसका दुख दर्द जानिये तथा उसकी सहायता कीजिये। कई अगुवे ऐसा सोचते हैं कि उनका काम केवल प्रचार करना है बाकि भेड़ों के साथ कुछ भी हो उन्हें इससे कोई मतलब नहीं है। चरवाहे या प्रचारक को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि जो मैं प्रचार कर रहा हूं क्या अपने जीवन में उस बात को मैं करके दिखाता हूं? एक अच्छे चरवाहे का मन अपनी भेड़ों के साथ जुड़ा रहता है।

एक और विशेष बात जो चरवाहे के विषय में कही जा सकती है कि वह जानता है कि किस स्थिति में क्या फैसला लेना चाहिए और सबसे पहिले उसे यीशु से सीखना चाहिए कि यीशु का जीवन कैसा था और उसे सदस्यों के प्रति कैसा व्यवहार रखना है? यीशु में एक बात हम यह देखते हैं कि वह अपनी भेड़ों को जानता है। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को जानता है। यीशु ने कहा था, "अच्छा चरवाहा मैं हूं जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं। इसी तरह से मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती है और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं। आप यदि मसीह की कलीसिया में एक चरवाहे की तरह है तो आप अपने सदस्यों से कितना प्रेम करते हैं? (यूहन्ना 10:14-15)। क्या आप एक अगुवे होने के नाते अपने सदस्यों से मिलते हैं? उनके साथ कोई पक्षपात तो नहीं करते? कई कलीसियाओं में, भेदभाव करने की भावना होती है। यीशु के समान चरवाही करने वाले अगुवे सदस्यों में भेदभाव नहीं करते।

कलीसिया को एकता में बनाकर रखना बड़ा आवश्यक है। और यह अगुवों के ऊपर होता है कि किस प्रकार से प्रत्येक सदस्य को संभालकर रखें। ध्यान रखें कि क्या आपकी भेड़ सुरक्षित है। उसे किसी प्रकार से चोट तो नहीं पहुंच रही? मेरी भेड़ बहुत समय से गायब है, मुझे उसका पता लगाना चाहिए। यह भी ध्यान रखना है कि भेड़ किसी और झुण्ड में तो नहीं चली गई? कई बार लम्बे समय तक भेड़ आराधना में नहीं आती तब अगुवे का क्या कर्त्तव्य है? उसकी जिम्मेवारी है कि पता लगाये कि यह सदस्य कहाँ चला गया है? कई अगुवे कहते हैं कि चला गया तो चला गया, हमें उससे कोई लेना देना नहीं है। ऐसा व्यवहार एक चरवाहे को नहीं दिखाना चाहिए। भेड़ को यह पता होना चाहिए कि चरवाहा मेरी परवाह करता है। कलीसिया में यह देखना चाहिए कि किसके पास क्या योग्यता है और उसके अनुसार उन्हें वो काम सौंपना चाहिए। यदि कोई अच्छी तरह से गीतों को गवा सकता है तो उसे जिम्मेवारी दे, यदि कोई सदस्य अच्छा बाइबल अध्ययन करा सकता है, या प्रचार कर सकता है तो उसे अवसर देना चाहिए। यीशु जो कि हमारा प्रधान अगुवा है एक बहुत अच्छा उदाहरण है, उसने जो बोला वो करके दिखाया। (प्रेरितों 1:1)। जो हम प्रचार करते है हम अपने जीवन से उसे करके दिखाये। प्रेरित पौलुस ने इसके विषय में एक बहुत अच्छी बात कही थी वह कहता है, "इसलिये कि तू जो दोष लगाता है, आप

ही वहीं काम करता है। और हम जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करने वालों पर परमेश्वर की ओर से ठीक-ठीक दण्ड की आज्ञा होती है।" (रोमियों 2:2-3)। फिर वह आगे कहता है, "सो क्या तू जो ओरों को सिखाता है, अपने आपको नहीं सिखाता? क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है आप ही चोरी करता है? तू जो कहता है व्यभिचार न करना, क्या आप ही व्यभिचार करता है? तू जो मूर्तियों से घृणा करता है, क्या आप ही मन्दिरों को लूटता है? एक प्रचारक या अगुवे को कलीसिया के सामने अपने जीवन से एक अच्छा उदाहरण रखना चाहिए।

आज इस बात की बहुत आवश्यकता है कि मसीह की कलीसिया में ऐसे अगुवे हो जो भेड़ों की अच्छी तरह से रखवाली कर सकें। आज हमें ऐसे अगुवों की आवश्यकता है जो वचन के अच्छे सिखाने वाले हो। (1 तीमु. 3:2)। मसीह की कलीसिया को ऐसे अगुवों की आवश्यकता है जिनमें सेवा भावना हो। अगुवों को बाइबल सिखाने में निपुण होना चाहिए। (1 तीमु 5:17)।

एक अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों की इस प्रकार से देखभाल करता है ताकि कोई भेड़िया उन पर हमला न कर दे। अच्छा चरवाह भेड़ों को छोड़कर भाग नहीं जाता। यीशु ने कहा था, "अच्छा चारवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। मजदूर जो न चरवाहा है और न भेड़ों का मालिक है भेड़िए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है और भेड़ियां उन्हें पकड़ता और तित्तर-बितर कर देता है। वह इसलिए भाग जाता है, क्योंकि वह मजदूर है, और उसे भेड़ों की कोई चिंता नहीं। जो अगुवे पैसा बनाने में लगे रहते हैं उन्हें अपनी भेड़ों की चिंता नहीं होती। और एक दिन जब प्रधान रखवाला अर्थात यीशु मसीह प्रगट होगा, तो जो ईमानदार चरवाह है उन्हें जीवन का मुकुट दिया जायेगा एक ऐसा मुकुट जो मुरझाने का नहीं। (1 पतरस 5:1-4)। यदि आप कलीसिया में अगुवाई करते हैं और इमानदारी से सेवा कर रहे हैं तो यीशु आपसे कहेगा, "धन्य है अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वास योग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा, अपने स्वामी के आनन्द मैं संभागी हो। (मत्ती 25:23)। आप किस प्रकार के अगुवे हैं?

# एक मसीही कौन नहीं है?

## सनी डेविड

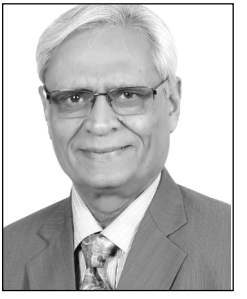

कहा जाता है, कि संसार में धार्मिक दृष्टकोण से, सबसे अधिक वे लोग हैं जो मसीही कहलाते हैं। संसार में कुछ ऐसे देश भी हैं जिन्हें "मसीही देश" कहा जाता है। पर वास्तविकता यह है, कि पृथ्वी पर हर एक जन जो अपने आप को मसीही कहता है, हकीकत में वह एक मसीही, अर्थात् मसीह यीशु का अनुयायी नहीं है। प्रभु यीशु मसीह ने एक बार कहा था, कि जब तुम मेरा कहना ही नहीं मानते तो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु

क्यों कहते हो? (लूका 6:46)। प्रभु ने यह भी कहा था, कि जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहते हैं, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा। (मत्ती 7:21)। और प्रभु यीशु ने यह भी कहा था कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर इनका मन मुझ से बहुत दूर रहता है; क्योंकि ये मनुष्य की विधियों को धर्मोपदेश करके मानते और सिखाते हैं। (मत्ती 15:8, 9)। आज बहुत से लोग अपने आपको केवल इसलिये मसीही कहते हैं, क्योंकि उनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जहाँ माता-पिता मसीह में विश्वास करते थे। किन्तु प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था, कि यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना 3:3, 5)।

कई बार लोग अपनी बीमारियों से छुटकारा पाने के लिये मसीही बन जाते है। या किसी प्रकार का कोई आर्थिक लाभ उठाने के लिये अपने आप को मसीही कहलाते हैं। पर सच्चाई यह है, कि ऐसे लोग वास्तव में मसीही कभी बने ही नहीं थे; क्योंकि उन्हें तो पता ही नहीं कि एक मसीही क्यों और कैसे और किस लिये बना जाता है। दूसरी ओर, कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अपने आप को मसीह यीशु के सुसमाचार का प्रचारक कहते हैं, और वे लोगों को यह कहकर अपनी ओर आकर्षित करते हैं, कि वे मसीह के नाम से उन्हें चंगाई दे सकते हैं, या उनके शारीरिक दुख-दर्दों से छुटकारा दिला सकते हैं। जबकि स्वयं ही बीमार होते हैं, और उनके परिवारों में भी लोग बीमार होते हैं पर वे उन्हें छोड़कर अन्य लोगों को चंगा करने का दावा करते हैं। ऐसे लोग भोले-भाले लोगों को धोखा देते हैं, ओर वह उन्हें झूठे आश्वासन देते है। और न केवल अपनी, पर दूसरे लोगों की आत्माओं से भी खेल रहे हैं। ऐसे लोग मसीह के सेवक नहीं हो सकते, पर वे स्वयं अपने पेट की सेवा करते हैं। (रोमियों 16:17, 18)।

किन्तु, एक मसीही, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह का एक अनुयायी बनने का एक मात्र उद्देश्य अपने पापों से उद्धार या मुक्ति पाना ही होना चाहिए। पर यदि कोई किसी अन्य उद्देश्य से मसीह के पास आना चाहता है, तो वह एक मसीही कभी नहीं बन सकता। यदि कोई किसी प्रकार का आर्थिक लाभ पाने के लिये या किसी बीमारी से चंगाई पाने के लिये मसीही कहलाना चाहता है, तो वह व्यक्ति जानता ही नहीं कि एक मसीही क्यों बना जाता है। प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इंकार करे, और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।" यानि, यह एक व्यक्तिगत निश्चय है। इसमें कोई जोर-जबरदस्ती नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं अपने ही लिये निश्चय करना है। और किस लिये? यह समझकर और जानकर कि मसीह के पीछे हो लेने का अर्थ है, अपना क्रूस उठा लेना, और उस क्रूस को उठाए हुए मसीह के पीछे चलना। पर क्रूस का अर्थ क्या है? क्रूस का अर्थ है-दुख, दर्द, यातना और मौत! बाइबल कहीं भी ऐसा नहीं कहती, कि मसीह के पास आ जाने से या एक मसीही बन जाने से हमारे दुख-दर्द गायब हो जाएंगे, या हम अपनी बीमारी से चंगे हो जाएंगे। पर वास्तविकता यह है कि, एक मसीही बनने से पहले, या मसीह के पीछे हो लेने से पहले प्रत्येक व्यक्ति को यह

निश्चय स्वयं अपने लिये करना जरूरी है कि मुझे अपना क्रूस उठाकर प्रतिदिन मसीह के पीछे चलना होगा। बाइबल में यूहन्ना नामक पुस्तक के 6 अध्याय में हम बहुत सारे लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जो उस समय यीशु के पीछे हो लिये थे, क्योंकि यीशु ने उन पर तरस खाकर उन्हें रोटियां खिलाई थीं। पर जब वे फिर से यीशु के पास आए थे, तो प्रभु ने उन्हें संदेश देकर कहा था, कि, नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, पर उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो अनंत जीवन तक ठहरता है, जो मैं वास्तव में तुम्हें दूंगा। (यूहन्ना 6:27)। और जब प्रभु ने उन्हें इसी तरह की ओर शिक्षाएं देनी चाही थी, जिनका संबंध उनके शरीर से नहीं पर उनकी आत्मा से था, तो लिखा है, कि वे सब के सब वहाँ से निकलकर चले गए थे। प्रभु यीशु ने उन्हें जाने से नहीं रोका था। पर अपने बारह चेलों की तरफ मुड़कर प्रभु ने उनसे कहा था कि "क्या तुम भी ऐसे ही चले जाना चाहते हो?" पर उन में से एक ने प्रभु से कहा था, कि प्रभु ऐसा कैसे हो सकता है; तुझे छोड़कर हम किस के पास जा सकते हैं? क्योंकि हम जानते हैं कि अनन्त जीवन की बातें तो सिर्फ तेरे ही पास हैं। (यूहन्ना 6:67)।

एक मसीही बनने का या मसीह का एक अनुयायी बनने का दृष्टिकोण केवल यही होना चाहिए; और जो लोग मसीह के पास इस नजरिए से नहीं आते, वे वास्तव में मसीही कहला ही नहीं सकते। शारीरिक चंगाई और शारीरिक वस्तुएं पाने के लिये मसीह के पास न आएं; और वह कहीं मिल ही नहीं सकती; और उसे पाने के लिये सब को उसके पास आना जरूरी है। और वह चीज जो मसीह के पास है, वह है, अनंत जीवन, हमेशा की जिंदगी, जो उसके द्वारा ही स्वर्ग में मिल सकता है। क्योंकि वह कोई मनुष्य नहीं, किन्तु परमेश्वर है। वह पृथ्वी पर मनुष्यों का उद्धार करने के लिये और उन्हें पाप से मुक्त करने के लिये आया था। उसने क्रूस पर चढ़कर अपने आप को बलिदान किया था और मानवता के पापों का प्रायश्चित करने को अपना खून बहाया था। यह काम, अर्थात् मनुष्य के पापों का प्रायश्चित किसी और ने नहीं किया, और न कोई और कर सकता था। केवल परमेश्वर ही यह काम कर सकता था। और इसीलिये प्रभु के चेलों ने यीशु से कहा था, कि हम और किसके पास जाएं, क्योंकि अनन्त जीवन की बातें तो केवल तेरे ही पास है। यानि वे बातें, वे वस्तुएं जिनके द्वारा अनंत और हमेशा का जीवन मनुष्य को स्वर्ग में मिल सकता है, वे केवल मसीह के पास ही हैं।

क्योंकि केवल मसीह ने ही मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित करने को अपनी जान दी थी। केवल परमेश्वर ही मनुष्य का पाप से उद्धार कर सकता है, और मसीह स्वयं ही परमेश्वर था। हम अपने अच्छे और भलाई के काम करके अपने आप को पाप से मुक्त नहीं करा सकते। केवल परमेश्वर ही हमें पाप से मुक्त करके, हमें स्वर्ग में रहने के योग्य बना सकता है। इसलिये जरूरी है, कि हर एक इंसान परमेश्वर के पुत्र मसीह यीशु में विश्वास लाए। क्योंकि परमेश्वर, यीशु मसीह के द्वारा जगत के सब लोगों का उद्धार करना चाहता है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को किसी एक जाति या धर्म के लोगों के लिये बलिदान नहीं किया था। परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह किसी एक

देश के लोगों के लिये पृथ्वी पर मरने को नहीं आया था। पर वह हम सबके लिये परमेश्वर की इच्छा से, सारे जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित करने को, क्रूस पर लटकाया गया था। प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो तो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान है, और यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊंगा, कि जहाँ मैं रहूं वहीं तुम भी रहो। (यूहन्ना 14:1-3)।

स्वर्ग एक तैयार किया हुआ स्थान है। परमेश्वर ने उसे अपने लोगों के रहने के लिये तैयार किया हैं और उसमें केवल वही लोग प्रवेश करेंगे जो उसमें रहने के लिये तैयार है। प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग से पृथ्वी पर इसी उद्देश्य से आया था। वह लोगों को स्वर्ग में रहने के लिये तैयार करने को आया था। उसने न केवल अपना बलिदान देकर सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित ही किया था, पर उसने पृथ्वी पर एक ऐसा आदर्शपूर्ण जीवन भी व्यतीत किया था जिसमें एक भी बुराई या पाप नहीं था। इसीलिये, बाइबल हमें यह सिखाती है कि जब हम परमेश्वर के पुत्र यीशु की आज्ञा मानकर, अर्थात् उसमें सारे मन से विश्वास लाकर, प्रतिदिन उसके आदर्शों पर चलते हैं, तो हम जानते हैं कि हम स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये तैयार हैं।

मित्रो, परमेश्वर हमें स्वर्ग में देखना चाहता है; मसीह यीशु हमें स्वर्ग में ले जाना चाहता है, उसने हमें स्वर्ग के योग्य बनाने के लिये ऐसा महान बलिदान दिया है। पर क्या हम स्वर्ग में जाने के लिये तैयार हैं? मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, मसीह ने कहा था। और जब हम उसमें विश्वास लाते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके सिखाएं आदर्शों पर चलते हैं तो हम निश्चय ही जानते हैं कि हम उसके द्वारा अपने पापों से छुटकारा पाकर परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करेंगे।

क्या आपके पास यह आशा है? यदि नहीं, तो आपको अपना मन फिराकर मसीह के पास आने की आवश्यकता है।

# हम यहाँ क्यों है?

## जे. सी. चोट

आप कौन है? आप कहाँ से आये हैं? यहाँ से अर्थात पृथ्वी से आप कहाँ जाएंगे? क्या आप जानते हैं कि बहुत सारे लोग इन बातों का उत्तर नहीं दे सकते। उन्हें तो यही नहीं मालूम कि वे यहाँ क्यों है और क्या कर रहे हैं? वे संसार में रह तो रहें है परन्तु उनका कोई उद्देश्य नहीं है।

आज बहुत से लोग इस दुनिया में विकासवाद की बातें करते हैं। वे सोचते हैं कि जीवन का आरंभ अपने आप ही हो गया था। या बन्दर से मनुष्य का विकास हुआ है। एक बुद्धिमान मनुष्य यह कैसे कह सकता है कि उसका विकासवाद से जन्म हुआ है। जरा सोचिये आप अपने बारे में, क्या आपकी उत्पत्ति

बन्दरों से हुई है? या महान परमेश्वर ने आपको बनाया है? हमें यह जानना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें बनाया है और वह हमारा सृष्टिकर्ता है। आज बहुत से लोग स्वयं अपने बारे में भी कन्फ्यूज है कि वे कहाँ से आये हैं?

आज कई लोग यह जानने के इच्छुक है कि उनके पूर्वज कहाँ के थे तथा उनकी उत्पत्ति के साथ क्या-क्या जुड़ा हुआ है? यह अच्छी बात है कि लोगों में यह जिज्ञासा होती है। हम देखते है। कि हमारे आदि माता-पिता आदम और हव्वा थे और फिर हम नूह के बारे में देखते हैं कि किस प्रकार से वे परमेश्वर की ओर से है। (उत्पत्ति 1:26, 27)।

हम बाईबल में पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को नर और नारी करके बनाया। और उसने उन्हें इस तरह से बनाया है कि वे संतान उत्पन्न करें। उसने पुरुष के लिये एक और पुरुष नहीं बनाया। अदन की वाटिका में उन्हें रखा गया था तथा उनकी प्रत्येक आवश्यकता को पूरा किया गया। जीवन का वृक्ष भी अदन की वाटिका में था। परमेश्वर उन पर यह दबाव नहीं डालना चाहता था कि वह उसकी अराधना करें। उनके पास एक चुनाव था कि वह अपने सृष्टिकर्ता की अराधना करें। उसने उनसे कहा वाटिका में जो फल खाना चाहें वे खा सकते हैं परन्तु अच्छे और बुरे ज्ञान वाले वृक्ष का फल न खायें। उसने कहा था कि जिस दिन तुम इस फल को खाओगे उस दिन मर जाओगे। और हम जानते हैं कि किस प्रकार से उन्होंने वो फल खाया और वे आत्मिक रूप से मर गये। आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से निकाल दिया गया। (उत्पत्ति 2 और 3 अध्याय)।

फिर परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की थी वह अपने पुत्र को इस जगत में भेजेगा ताकि लोगों को उनके पापों से मुक्ति मिल सके। हम देखते हैं कि किस प्रकार से यीशु जगत में आया, लोगों के बीच में रहा, फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया, ताकि वह जगत के पापों के लिये अपने प्राणों को बलिदान करे। उसके बलिदान के द्वारा मनुष्य के लिये परमेश्वर के पास आना संभव हो गया। परमेश्वर ने यीशु को क्रूस पर बलिदान करके एक सुसमाचार दिया है। इस सुसमाचार को सारे संसार में फैलाने के लिये यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी थी। (मत्ती 1:18-19)। परमेश्वर ने अपने वचन में बताया है कि सुसमाचार क्या है? (1 कुरि. 15:1-4)।

इब्रानियों का लेखक हमें बताता है, "पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था; मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे। क्योंकि जिसके लिये सब कुछ है और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा है कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाये, तो उनके उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। क्योंकि पवित्र करने वाला और जो पवित्र किए जाते हैं; सब एक ही मूल से है, इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता..... और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले।" (इब्रानियों 2:9-15)।

यूहन्ना ने यीशु के विषय में कहा था, "देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है; कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएं और हम है भी, इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना है। हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की संतान है, और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे। क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह हैं और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र बनाता है, जैसा वह पवित्र है।" (1 यूहन्ना 3:1-3)।

हम परमेश्वर की संतान कैसे बनते हैं? हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं; यह विश्वास करते है कि वह परमेश्वर का पुत्र है और अपने पापों से मन फिराना है। तथा यह अंगीकार करना है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना है। (यूहन्ना 14:1-3; प्रेरितों 2:38; मत्ती 10:32; प्रेरितों 22:16)। प्रेरित पौलुस कहता है, "तुम जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया उन्होंने मसीह को पहिन लिया हैं (गलतियों 3:27)। उद्धार पाये हुओं को कलीसिया में प्रभु मिलाता है।

तो हम कौन है? शरीरिक रूप से हम आदम और हव्वा से आएं है परन्तु आत्मिक रूप से परमेश्वर से हमारा संबंध है। परमेश्वर ने हमें बनाया है। जब हम प्रभु की आज्ञा मान कर बपतिस्मा लेते हैं तब हम मसीही बन जाते हैं। (प्रेरितों 11:26)। यदि हम मृत्यु तक विश्वास योग्य बनकर रहेंगे तब हमें जीवन का मुकुट मिलेगा (प्रकाशित 2:10)।

---

# पास्टर और चीफ़ पास्टर

## जॉन वाडी

आजकल कई स्थानों पर प्रचारकों को पास्टर तथा चीफ़ पास्टर कहा जाता है। बाइबल में मैंने कोशिश करी कि देखूं कहाँ पर पतरस पौलुस या यूहन्ना को पास्टर कहा गया था। मुझे पूरी बाइबल में कहीं पर भी कोई आयत ऐसी नहीं मिली जहाँ किसी भी प्रेरित को पास्टर कह कर बोला गया हो। यदि हम प्रेरितों 20:28 में पढ़ें तो वहाँ प्रेरित पौलुस कहता है, "इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो, जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है। यहाँ वह अध्यक्ष यानि पास्टर्स की बात कर रहा है। इन्हें चरवाहे या विशप भी कहा जाता है। इनकी योग्यताओं के विषय में हम 1 तीमु. 3:1-7 तथा तीतुस 1:5-9 में पढ़ते है। इनकी योग्यताएं हैं निर्दोष होना, एक ही पत्नी का पति (अर्थात यह पास्टर्स पुरुष लोग होते हैं), संयमी सुशील, सभ्य पहुनाई करने वाला और वचन को सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मारपीट करने वाला न हो वरन कोमल हो, झरगड़ालू न हो और न लोभी हो अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, अपने बच्चों को गंभीरता से आधीन रखता हो। नया

चेला न हो। बाहर वालों में उसका सुनाम हो। जिसमें यह योग्यताएं होती है वही व्यक्ति पास्टर या ऐल्डर बनने के योग्य होता है। बाइबल के समय में प्रचारकों को कभी भी पास्टर या ऐलडर कहकर नहीं पुकारा जाता था। रोमियों 10:14 में इन्हें प्रचारक कहा गया है। इन्हें सेवक भी कहा गया है। (1 तीमु. 4:6)। आजकल की तरह वे पास्टर नाम से नहीं जाने जाते थे। आजकल कई स्त्रियां भी अपने को पास्टर कहती है। बाइबल अनुसार केवल पुरुष लोग ही पास्टर होते हैं तथा उनकी योग्यताओं के विषय में हमने पढ़ा था।

पास्टर सिस्टम जो पूरे संसार में प्रचालित है, बाइबल में हमें कहीं पर भी पढ़ने को नहीं मिलता। पास्टर को इस प्रकार से देखा जाता है जैसे वह किसी कलीसिया का हैड या इंचार्ज है। बहुत कम लोग जानते हैं कि बाइबल अनुसार ऐलडर्स को पास्टर भी कहा जाता है तथा यह बुजुर्ग तथा अनुभवी होते थे। प्रचारक लोग इनकी देखरेख में कार्य करते थे। बहुत दुख की बात है कि बहुत सारी बातें जो इस संसार में मानी और सिखाई जाती हैं बाइबल में हमें पढ़ने को नहीं मिलती। न ही हम बाइबल में पढ़ते है कि धार्मिक पदवी के रूप में किसी को "रैवरेन्ड" कहा जाता था। यह नाम केवल परमेश्वर का है। इसका अर्थ है जिससे भय खाया जाये। यानि परमेश्वर का नाम भययोग्य है। आप अंग्रेजी की बाइबल में भजन 111:9 में इसके बारे में पढ़ सकते हैं। जो अपने को "रैंवरेंड" कहते हैं, क्या आप परमेश्वर के तुल्य है जिससे भय खाया जाये? एक दिन उसकी अदालत में आपको इसका जवाब तो देना पड़ेगा। उस दिन आपको जवाब देना भारी पड़ जायेगा। जिस दिन आपसे पूछा जायेगा कि आप किस अधिकार से अपने आपको रैवरेन्ड कहते थे? कई तो धार्मिक रूप से अपने को "फादर" कहते हैं। बाइबल में पढ़िये मत्ती 23:9 में लिखा है किसी को पिता भी मत कहना अर्थात धार्मिक रूप से। कई लोग धार्मिक रूप से विशेष प्रकार के कपड़े पहनते है। कई अगुए चोगे पहनते हैं। यह सब परमेश्वर के वचन अनुसार नहीं है। बाइबल कहती है यदि कोई बोले तो ऐसे बोले जैसे परमेश्वर का वचन (1 पतरस 4:11) आप मत्ती 23:5-7 को भी पढ़िये तथा बाइबल की बातों को बाइबल अनुसार मानिये।

---

# प्रभु का भोज मनाया जाना

## मुख्य वचनः 1 कुरिन्थियों 11:23-25

### ओवन डी. आल्ब्रट

प्रभु भोज का मनाया जाना बाइबल की शिक्षा के आधार पर होना चाहिए। परमेश्वर ने प्रगट कर दिया है कि इसमें क्या होना चाहिए और इसको कब लिया जाना चाहिए, पर उसने यह नहीं बताया कि इसे कैसे मनाया जाना चाहिए। इसके बारे में तो निर्देश दिए गए हैं कि क्या किया जाना आवश्यक है पर कोई आज्ञा या नमूना नहीं दिया गया, इस कारण भोज को लेने का ढंग मनुष्य की समझ और प्राथमिकता पर छोड़ दिया जाता है।

**चीजों को लेना:** रोटी और दाख रस खरीदे जा सकते हैं या घर में बनाए जा सकते हैं। यह निर्णय मण्डली के अगुओं पर छोड़ा जाता है। खरीदी जाए या घर में बनाई गई हो, रोटी खमीरी नहीं होनी चाहिए और कटोरे में अंगूर का रस ही हो, जैसे भोज की स्थापना में यीशु ने इस्तेमाल किया था।

**भोज देने से पहले:** वचन यह नहीं बताता कि भोज दिए जाने से पहले क्या कहा जाना चाहिए। यीशु ने प्रेरितों को संक्षेप में यह कहते हुए कि जो रोटी उनके लिए दी गई है वो उसकी देह है, उन्हें संक्षेप में इसका अर्थ बताया (लूका 22:19; 1 कुरिन्थियों 11:24)। रोटी खाने के बाद उसने कहा कि कटोरा पापों की क्षमा के लिए बहाया गया और ये नई वाचा का उसका लहू है (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24; लूका 22:20; 1 कुरिन्थियों 11:25; देखें प्रकाशितवाक्य 1:5)।

भोज लिए जाने से पहले गाना गाने की कोई बात का वर्णन नहीं है। परन्तु गाना आराधना के लिए स्वीकृत माना गया है (देखें इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16), इस कारण भाग लेने वालों को यीशु पर ध्यान लगाने में सहायता के लिए चुनिंदा गीत सही हो सकता/सकते हैं जो उसके जीवन, प्रेम, बलिदान, पुनरुत्थान और भक्ति पर हो।

यीशु पर ध्यान लगाने और आत्मिक सामर्थ के लिए उनहें उसके और निकट लाने में आराधकों की सहायता के लिए कोई भी संदेश काम करेगा। मण्डली को प्रभु-भोज देने के लिए तैयार करने के लिए बोलने वाले व्यक्ति को इन बातों का ध्यान रखना चाहिए:

*वचन या आयतों को ध्यान से चुने, उन्हें यीशु पर लागू करें और उनके आत्मिक अर्थों पर चर्चा करें।*

*समझें कि उसका उद्देश्य यीशु पर ध्यान लगाने में होना चाहिए। अपनी ओर ध्यान न खींचें।*

*उसे मसीह की महिमा और उसके क्रूस पर दिए जाने को ध्यान में रखा जाना चाहिए।* (1 कुरिन्थियों 2:2), क्योंकि वही भोज के केन्द्र में है।

**रोटी और कटोरा देना:** दूसरी शताब्दी के आरंभ में, प्रभु की मेज प्राचीन या ऐल्डर ही लगाते थे। लगभग 110 ईस्वी में इग्नेशियस ने बताया:

कलीसिया से संबंधित बातें बिशप को छोड़ कोई अन्य व्यक्ति न करे। वह एक मान्य युक्रित हो जो बिशप या उसके अधीन हो जिसे उसने यह काम दिया हो।

200 ईस्वी के लगभग रोमी हिपोलिटस, जिसने आरंभिक कलीसिया के संबंध में एक बड़ी पुस्तक और कई लेख लिखे, प्रार्थना का एक नमूना लिखा और कहा:

और विशप पहले कहे गए के अनुसार धन्यवाद दें। यह उसके लिए किसी संक्षिप्त रूप के साथ प्रार्थना दोहराना आवश्यक नहीं है, कोई उसे रोकेगा नहीं।

प्रभु-भोज केवल ऐल्डरों द्वारा दिए जाने में कोई बुराई नहीं है, पर ऐसा करना जबर्दस्ती नहीं है। नया नियम न तो बताता है और न ही उदाहरण देता है कि मण्डली में मेज पर कौन लोग सेवा करते हैं, इस कारण कोई भी विश्वासी मसीही पुरुष इस सेवा के कार्य को कर सकता है। स्त्रियों को शामिल नहीं किया गया क्योंकि उन्हें

मण्डली को सम्बोधित करने (1 कुरिन्थियों 14:34,35) या आराधना में मुख्य भूमिका निभाने का अधिकार नहीं है (1 तीमुथियुस 2:11,12)। आरंभिक कलीसिया का इतिहास इस तथ्य से मेल खाता है कि सार्वजनिक सभाओं में स्त्रियां नहीं बल्कि पुरुष अगुआई किया करते थे।

नये नियम की रोटी और अंगूर का रस लोगों को कैसे दिया जाए? नीचे दिए उदाहरणों सहित मण्डलियां इसे अलग अलग प्रकार से लेती हैं:

- सदस्य भोज लेने के लिए मेज के आगे आ सकते हैं।
- प्रार्थना के बाद, सदस्य रोटी थोड़ा मण्डली से लेकर आगे से पीछे तक सदस्य के पास पहुंच सकते हैं।
- कई मण्डलियां एक साथ रोटी खाने और बाद में एक साथ कटोरे में से पीने के लिए सबको बांटे जाने के बाद प्रतीक्षा करती हैं।

**लिए जाने का क्रम:** यीशु ने रोटी तोड़ी और इसे प्रेरितों को दिया, और फिर उन्होंने कटोरे में से लिया। यीशु के उदाहरण में एक विशेष क्रम, जिसे आज माना जाना चाहिए। (पढ़ें मत्ती 26:26, 27; मरकुस 14:22, 23; लूका 22:17-20; 1 कुरिन्थियों 11:23-25)।

रोटी के साथ उसने इस प्रकार किया:

*इसे लिया।*
*इसे आशीष दी, या इसके लिए धन्यवाद दिया।*
*इसे तोड़ा।*
*इसे प्रेरितों को दिया।*
*उन्हें अपने स्मरण के लिए इसे खाने को कहा।*

फिर उसने कटोरे के साथ इस प्रकार किया:

*इसके लिए धन्यवाद दिया, इसे लेने के बाद इसे प्रेरितों को पहले दिया।*
*उन्हें अपने स्मरण में इसे पीने को कहा।*

यह बात कि यीशु ने देने से तुरन्त पहले रोटी तोड़ी भोज के "रोटी तोड़ने" (प्रेरितों 2:42) या "रोटी तोड़ना" (प्रेरितों 20:7; देखें 1 कुरिन्थियों 10:16) के रूप में भोज का कारण नहीं मानी जानी चाहिए। अधिक संभावना यह है कि इस वाक्यांश का इस्तेमाल इसलिए किया क्योंकि इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल भोजन खाने के लिए होता था, और यहाँ यह प्रभु का भोजन है।

**भोज के लिए प्रार्थना:** लूका और पौलुस ने लिखा कि यीशु ने रोटी के लिए "धन्यवाद" किया "उसने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोडी" (लूका 22:19); "प्रभु यीशु ने.... रोटी ली; और धन्यवाद करके उसे तोड़ा..." (1 कुरिन्थियों 11:23ख, 24क)।

कटोरे के लिए प्रार्थना करते हुए यीशु ने "धन्यवाद" दिया। "यूखरिस्त" (मत्ती 26:27; मरकुस 14:23)। पौलुस ने यीशु के कटोरे को लेने के लिए इसे आशीष देने या धन्यवाद देने का उल्लेख नहीं किया। (1 कुरिन्थियों 11:20)।

"आशीष" और "धन्यवाद" का इस्तेमाल पहली बार एक दूसरे के स्थान पर

होता है। कारण यह है कि (यूलोजियो) का अर्थ धन्यवाद करना या "विशेष समर्थन दिए जाने के लिए आभार व्यक्त करना" है। मत्ती ने चार हजार लोगों को खिलाने में रोटी के टुकड़ों को तोड़ने से पहले की गई यीशु की प्रार्थना के संबंध में "धन्यवाद देना" (यूखारिस्तयो) इस्तेमाल किया (मत्ती 15:36-38), जबकि मरकुस ने (मरकुस 8:7-9)। जबकि मरकुस ने "आशीष दी"।

रोटी और कटोरे में भाग लेने से पूर्व की गई प्रार्थनाएं क्रूस पर यीशु के बलिदान की आशीष के लिए परमेश्वर का आभार व्यक्त होना चाहिए। वे व्यक्तिगत खामोशी से की जाने वाली प्रार्थनाएं नहीं बल्कि शेष मण्डली द्वारा कही गई प्रार्थना के अर्थ के साथ होनी चाहिए। ऐसी अगुवाई में प्रार्थना करने का लक्ष्य लम्बी नहीं बल्कि अर्थपूर्ण प्रार्थना होनी चाहिए। हर सार्वजनिक प्रार्थना में सादगी और संजीदगी का होना आवश्यक है।

कुछ लोग मण्डली को दिए जाने से पहले रोटी और कटोरे दोनों के लिए एक साथ धन्यवाद की प्रार्थना करते हैं। रोटी से पहले प्रार्थना करने और फिर कटोरे से पहले प्रार्थना में अगुआई करने का यीशु का अवश्य ही कोई अच्छा कारण होगा। सबसे उपयुक्त बात उसके नमूने का अनुसरण करना और रोटी और कटोरे दोनों में से लेने से पहले धन्यवाद देना है।

**किसके लिए?:** क्या रोटी और कटोरा बच्चों को, गैर मसीही लोगों को और आगन्तुकों को दिया जाना चाहिए? कई डिनोमिनेशन आगन्तुकों को प्रभु-भोज लेने की अनुमति देने से पहले सिफारिशी चिट्ठी मांगते हैं। परन्तु यह अनावश्यक है। अन्य भोज केवल उन्हीं को देते हैं जिनका नाम कलीसिया के सदस्यों में हैं। फिर से नये नियम में ऐसी कोई प्रथा नहीं मिलती।

हमारे बीच में अनजान आगन्तुक हो सकते हैं, इस कारण प्रभु-भोज का उद्देश्य बताना चाहिए और यह कि इसे किसे लेना चाहिए। जिन लोगों को प्रभु-भोज पाने का अधिकार है वे मसीह की एक देह (1 कुरिन्थियों 10:16, 17; 12:13), अर्थात कलीसिया (कुलुस्सियों 1:18) के लोग है। मसीह में बपतिस्मा लेने के कारण (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27) उस देह में हैं (रोमियों 12:5)।

जिन बच्चों का बपतिस्मा नहीं हुआ है उन्हें छोड़ दिया जाना चाहिए। उपस्थित मसीही लोगों को अपने आपको जांचकर इसमें योग्य ढंग से भाग लें (1 कुरिन्थियों 11:27,28)। उस व्यक्ति के अपवाद के साथ जिसे मण्डली ने संगति से निकाल दिया है, हर मसीही को यह प्रतीक दिया जाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 5:11)।

**भोज का समय:** वचन यह बताता है कि प्रभु-भोज कब खाया जाए, पर समय नहीं। त्रोआस की कलीसिया रविवार यानी सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा हुई थी (प्रेरितों 20:6, 7)। समय का इतना महत्व नहीं है इस कारण मण्डलियां अपनी सुविधा के अनुसार सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होने का कोई भी समय तय कर सकती हैं। मसीहियत की आरंभिक शताब्दियों में कुछ मसीही लोग काम पर जाने से पहले सुबह-सुबह इकट्ठे होते थे।

भोज सभा के दौरान किसी भी समय यानी आरंभ में, बीच में या आराधना के

अंत में लिया जा सकता है। कई बार पूरी आराधना को प्रभु-भोज के इर्द-गिर्द रखना सहायक हो सकता है। गीत, वचन और प्रवचन परमेश्वर के बलिदान के मेमने के रूप में यीशु पर केन्द्रित हो सकते हैं जिसे उसकी मेज के गिर्द हमारे इकट्ठा होने से महिमा दी जा रही है।

यदि कुछ लोग रविवार प्रातः की सभा में इकट्ठा नहीं हो पाते तो मण्डली आमतौर पर उन सदस्यों के लिए दिन में किसी और समय भोज दिए जाने का प्रबंध करती है।

कई मसीही उचित कारणों से जैसे बीमार होने, घायल होने, अपंग होने या अस्पताल में होने के कारण भाग नहीं ले सकते। निश्चय ही जो नहीं आ सकते उन्हें अपने प्रभु के साथ सहभागिता करने और आत्मिक सामर्थ पाने का अवसर देना सहायक है। सदस्यों के एक समूह के लिए प्रतीकों को उनके पास ले जाना और उन्हें गीतों, प्रार्थनाओं, वचन और संक्षेप में सबक देकर प्रोत्साहित करना अच्छा है। ये सभी लोग परमेश्वर के लोगों के आत्मिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।

जो सदस्य केवल प्रभु-भोज में भाग लेने के लिए आने का निर्णय लेते हैं और फिर चले जाते हैं वे आराधना के अन्य पहलुओं और मसीही संगति के महत्व को अनदेखा कर रहे हैं।

---

# आपका विवाह सफल हो सकता है.... समस्याओं को सुलझा कर

## कोय रोपर

विवाहित होने के बाद एक बात तो निश्चित है कि विवाह के बाद आपको या आपके साथी को कई बार समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप शायद इससे असहमत होंगे।

**विवाह में आपके मतभेद क्यों हैं?:** विवाह में झगड़े क्यों उत्पन्न होते हैं? इसके अनगिनत कारण है; लेकिन आइए हम चार विशेष कारणों पर विचार करें।

**पृष्ठभूमि में भिन्नताएं:** एक दम्पत्ति की पृष्ठभूमि अलग हो सकती है। जब दो जन विवाह में इकट्ठे होते हैं तो दो संस्कृतियों की मुठभेड़ होती है। हर कोई ऐसे घर से होता है, जहाँ का रहन-सहन अलग होता है। हो सकता है एक घर में सभी निर्णय पति ही लेता हो जबकि दूसरे घर में होने वाली हर गतिविधि की मुखिया पत्नी हो सकती है। एक जन किसी दूसरे शहर से होगा। एक को संगति का शौक होगा, दूसरा खामोशी पसंद करता होगा।

**पुरुष और स्त्री में भिन्नताएं:** विवाहित साथियों में भिन्नताएं होती हैं, क्योंकि उनमें एक पुरुष होता है और दूसरी स्त्री। पुरुषों और स्त्रियों में शारीरिक ही नहीं मनोवैज्ञानिक भिन्नताएं होती हैं। इनमें से कुछ भिन्नताएं सांस्कृतिक गुणों के अवशेष

हैं, लेकिन उनमें से कुछ उनके अपने-अपने मनों में जगह बना चुके हैं। दूसरे शब्दों में परमेश्वर ने उन्हें ऐसे बनाया है।

**व्यक्ति में भिन्नता:** दम्पत्ति का व्यक्तिगत अलग-अलग हो सकता है। उदाहरण के लिए एक बर्हिमुखी हो सकता है और दूसरा अन्तर्मुखी। एक घर को साफ-सुथरा रखने में लगा रहता है और दूसरा घर को विश्राम करने की आरामदायक जगह मानता है। एक रात देर तक जागना पसंद करता है और दूसरा प्रातः जल्दी उठना पसंद करता है।

**"निकटता का जोखिम"** इकट्ठा रहना मतभेद उत्पन्न करता है। उसकी कुछ बातें विवाह से पहले आपको बहुत प्यारी लगती हैं, लेकिन विवाह के दो वर्ष बाद, वही बातें बेहुदा लगने लगती है। जब आप एक-दूसरे को जान रहे थे तब उसका आवश्यक तिथियों को भूलना आपको थोड़ा-बहुत चिढ़ा देता होगा, देर न करें। तीसरा, यदि आपका जीवन साथी कुछ ऐसा करे, जिससे आपको क्रोध आए तो आप उस मुद्दे पर बात करने को न टालें। बाइबल कहती है, "सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे" (इफिसियों 4:26ख)। अगर जख्म का इलाज न किया जाए तो वह नासूर बन जाता है; एक मानसिक जख्म जिसका इलाज न किया जाए तो गलकर एक छोटे से बड़ा बन सकता है। कुछ विवाहित लोगों ने यह पाया है कि जो सबसे उत्तम नसीहत उन्होंने कभी पाई है, वो थी, "बिस्तर पर क्रोध में मत जाओ।"

सोच समझकर बात करें। चौथा, जब आप अपने जीवन साथी से किसी समस्या पर बातचीत करें, तो आपको शब्दों का चुनाव ध्यानपूर्वक करना चाहिए, जैसे पौलुस ने कहा है, "तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए" (कुलुस्सियों 4:6) अपने साथी से ऐसे बात न करें जैसे कि उसमें अक्ल नहीं हैं, बल्कि प्रेम से बात करें, ऐसे जैसे आप मानते हैं कि वह वही करना चाहता है, जो ठीक है।

बहुत से विशेषज्ञ विवाह पर सलाह देते हैं कि अपने साथी के साथ उसके व्यवहार के बारे में जो आपको परेशान करता है, बात करने से पहले इस बात पर मनन करना चाहिए कि आपको कैसा लगता है। अपने जीवन साथी पर दोष लगाना या प्रेम न करने वाला, जैसे लांछन लगाने से अच्छा है कि आप उसके व्यवहार के प्रति अपनी भावनाओं को उसके सामने स्पष्ट करें।

ध्यानपूर्वक सुनें। पांचवां, अपने साथी के प्रत्युत्तर को ध्यानपूर्वक सुनें। हर कहानी के हमेशा दो पहलू होते हैं। आपके पास यह सोचने के कुछ कारण हैं तो आपके साथी के पास भी आपके साथ ऐसा व्यवहार करने या यह सोचने के कुछ कारण होंगे कि इस मामले के प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं या इसे टाला नहीं जा सकता। इस संभावना पर भी विचार करें कि आपको गलती भी लग सकती है। अपने साथी की बात को ध्यानपूर्वक सुन कर आप उसके प्रति अपना सम्मान व्यक्त करते हैं और यह दिखाते हैं कि आप अपने साथी को अपने बराबर मूल्यवान और होनहार व्यक्ति मानते हैं। परस्पर सहमति से उपाय खोजें। छठा कोई ऐसा उपाय खोजें, जिससे दोनों सहमत हो। ऐसा उपाय खोजें, जिससे दोनों संतुष्ट हो। अगर मुद्दा यह है कि आप और आपकी पत्नी इस बात पर सहमत नहीं हो सकते कि बेटे को कितनी आजादी देनी

चाहिए, इसका कारण यह हो सकता है कि आपकी पत्नी आपसे अधिक रक्षात्मक है। इसके लिए उसे यही सुझाव दिया जा सकता है कि वह इन हालत पर दोबारा विचार करें और कुछ हालात में बच्चे को अधिक छूट दे। ऐसा उपाय घर का माहौल शान्तिमय बना देगा।

कई बार एक साथी के लिए उत्तर होता है कि वह पश्चात्ताप करे, अपने गलत व्यवहार को बदलने का प्रण करे और क्षमा मांगे। अगर क्षमा की आवश्यकता हो तो बेहिचक क्षमा किया जाना चाहिए।

याद रखें कि मसीही विनम्र होते हैं। सातवां, याद रखें कि मसीह रिश्ते की कुंजी विनम्रता है। मसीहियों को चाहिए कि वे एक-दूसरे के अधीन रहें (इफिसियों 5:21), शासकीय अधिकारियों के अधीन रहें (रोमियों 13:1; देखें मत्ती 5:41), कलीसिया के अगुवों के अधीन रहे (इब्रानियों 13:17)। दासों को अपने स्वामियों के अधीन रहना आवश्यक है (इफिसियों 6:5)। पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए (इफिसियों 5:22-24), और बच्चों को अपने माता-पिता के अधीन रहना चाहिए (इफिसियों 6:1)। सबको परमेश्वर के अधीन रहना चाहिए (याकूब 4:7)। मसीही अपनी मनमर्जी से नहीं रह सकते। इसलिए यदि मसीही पति-पत्नी किसी बात पर असहमत हो तो उन दोनों की प्रवृत्ति सही होनी चाहिए कि एक-दूसरे से समझौता कर लें।

आवश्यकता पड़ने पर हालात से समझौता करें। आठवां, यदि कोई न निकले तो आपको अपने जीवनसाथी को वैसे ही कबूल करना पड़ेगा, जैसा/जैसी वो है। ऐसे हालात तब बन सकते हैं जब एक साथी से झगड़ा खत्म करना चाहता है पर दूसरा नहीं। एक मसीही को सोचना चाहिए कि अपने विवाहित साथी के गलत व्यवहार के बदले उसके साथ गलत बर्ताव करना उचित नहीं है।

यदि आपके साथी का व्यवहार घिनौना है और वह बदलना नहीं चाहता, तो यह कहना बहुत बड़ी बात होगी, आपको उसके साथ उसके उसी व्यवहार के साथ रहना सीखना होगा। तब नहीं अगर इसका हल अलगाव या तलाक ही हो। आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? ऐसा करने में बहुत सी बातें आपकी मदद कर सकती हैं; यीशु आपको ऐसी परीक्षा सहने की हिम्मत देगा; प्रार्थना के द्वारा आप परमेश्वर से मदद पा सकते हैं। दोस्त खासकर कलीसिया के दोस्त आपकी मदद कर सकते हैं और आपके दिमाग में कई और उपाय भी आएंगे।

सबसे बढ़कर एक आज्ञाकारी मसीही और प्रेम करने वाला पति या पत्नी होने के नाते आप समय पर अपने जीवनसाथी को प्रोत्साहित करते रहेंगे कि वो "जो सही है वही करे" (देखें 1 पतरस 3:1, 2)।

अगर आपके पास हालात के साथ समझौता करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है तो आप इसे अनुग्रह से बिना चिड़चिड़ाए बिना ईर्ष्या के, बिना शिकायत के, बिना बदले की भावना के करें। आप अपने जीवन साथी का बर्ताव तो नहीं बदल सकते, लेकिन आप उसके उस बर्ताव के प्रति अपना व्यवहार बदल सकते हैं।

# धर्म ने आपके लिए क्या किया है?

**( 2 कुरिन्थियों 6:4-10; 11:16-33 )**

**जेम्स थॉम्पसन**

**"क्या वे ही मसीह के सेवक हैं?....**
**मैं उनसे बढ़कर हूं; ...." ( 11:23 )**

अमेरिकी धार्मिक अनुभव को "कैफेटेरिया स्टाइल" धर्म का नाम दिया गया है। अन्य कई धर्मों के विपरीत जहाँ धार्मिक अभव्यक्ति का एक प्रमुख रूप होता है हमें विश्वास के असीमित मूल ढंगों का सामना कर पड़ता है। इतनी सारी "प्रस्तुतियां" होने का परिणाम यह है कि हम ग्राहक बन जाते हैं जो बढ़िया से बढ़िया सौदे की तलाश में हो। अच्छे ग्राहकों की तरह हम सेवकाई का ऐसा रूप ढूंढ़ने के लिए जो हमें पसंद हो खरीदारी करते घूमते हैं। हम मीडिया और साहित्य के विभिन्न किस्मों के द्वारा किए जाने वाले दावों को सुनते और फिर अपनी पसंद बनाते हैं। यदि हम संतुष्ट न हुए तो हम दाम बदल सकते हैं।

हर उत्पाद से हमें यह पूछना सिखाया गया है कि "मुझे इससे क्या लाभ होगा?" "क्या हम इसकी कीमत पूरी दे पायेंगे?" आज ऐसे ही सवाल लोगों और कलीसियाओं द्वारा पूछे जा रहे हैं। इन सवालों ने कई कलीसियाओं और सेवकाइयों को अपने चंदे पर गर्व करने की स्थिति में ला दिया है। यह कलीसिया उनके लिए जो अच्छी कमाई की तलाश में हैं कुछ पेशकश करती है, एक और अरामदायक स्थान की पेशकश करती है जहाँ "मन की शांति" खरीदी जा सकती है। एक और आत्मिक शक्ति के चिन्हों को देखते रहने की पेशकश करती है। कलीसिया के अगुवे ऐसा धर्म देने की पेशकश करने के लिए जो इस प्रतियोगियों से अधिक आकर्षित हो मार्किट सर्वे करवाते हैं।

यह देखने के लिए कि हमें "इसमें से क्या" मिलेगा, अपने विश्वास को इस तरह करना गलत है? नया नियम कई बार बताता है कि हमें विश्वास से क्या मिलता है। यह वास्तव में मन की शांति, आशा, अपनेपन का स्थान और आत्मिक सामर्थ की पेशकश भी करता है। परन्तु यह देखने के लिए कि हर कोई क्या दे रहा है "खरीदारी करना" खतरनाक है। कुरिन्थियों के साथ पौलुस का अनुभव हमें सेवकाई के लिए "ग्राहक" वाले ढंग से खतरों का स्मरण करता है।

## मूर्खों का खेल ( 11:16-22 )

कुरिन्थी मसीही वे ग्राहक थे जो धर्म की दो किस्मों में से एक को चुनने पर विवश थे। "बड़े से बड़े प्रेरित" (11:5) और पौलुस ने मसीही सेवकाई के बहुत अलग-अलग संस्करण दिए थे। "बड़े से बड़े प्रेरितों" द्वारा पौलुस की आलोचना से देखते हुए हम यह मान सकते हैं कि उनकी सेवकाई कुछ शानदार बातें देती थी (तुलना 10:10)। वे प्रभवशाली बोलने वाले थे जिन्होंने अपने जीवनों में परमेश्वर की सामर्थ को स्पष्ट दिखाया था। उनकी सेवकाई स्पष्टतया उनकी बड़ी प्राप्तियों पर शेखी से भरी हुई थी। वास्तव में अध्याय 10 से 13 की चौंकाने वाली बात "घमण्ड" शब्द के रूपों की बारम्बरता है। यह शब्द संज्ञा या क्रिया रूपों में इन अध्यायों में उन्नीस बार आता है। "बड़े से बड़े प्रेरित" बड़ी आत्मिक सामर्थ वाले के रूप में अपने ऊपर घमण्ड करते थे (तुलना 11:18, 22)। उनका यह घमण्ड पौलुस के लिए रक्षात्मक बन गया।

"बड़े से बड़े प्रेरित "सम्भवतया "प्रभु के दिए हुए दर्शनों और प्रकाशनों" पर घमण्ड

करते होंगे (12:1), जिन्हें वे अपनी आत्मिक सामर्थ के चिन्हों के रूप में देते थे। वे पौलुस की आलोचना एक कमजोर व्यक्ति कह कर करते हैं जो नगर-नगर घूमता, सताव और मजाक का कारण है। वह जहाँ भी जाता, उसे नई पराजय का सामना करना पड़ा, क्योंकि उसे बार-बार गिरफ्तार किया जाता, पीटा जाता और नगर से भगा दिया जाता। इस दृष्टिकोण से पौलुस एक महत्वपूर्ण कार्य के लिए अयोग्य है (तुलना 2:16)। उसने अपने पीछे निर्बलता और नाकामी का एक रिकॉर्ड छोड़ दिया है।

हम ऐसे आरोपों का उत्तर कैसे देते हैं? हमें लग सकता है कि इसका बढ़िया उत्तर अपनी सेवकाई के अलोचकों की ओर ध्यान न देकर दिया जा सकता है। परन्तु पौलुस अपने आलोचकों की अनदेखी नहीं करता। हम खुश हो सकते हैं कि पौलुस ने उन्हें अनदेखा न करने का निर्णय लिया, क्योंकि उन्हें इन आरोपों के लिए उसका उत्तर मसीही की "पहचान" में नये नियम की सबसे स्पष्ट समझ देता है। पौलुस अपने बचाव के लिए अपने आलोचकों के घमण्ड से मिलाने का निर्णय लेता है। 6:4 में वह उन चिन्हों की सूची देता है जिन से वह अपने संदेह करने वालों की "सराहना करता" 11:16-18 में वह कहता है कि अब वह अपने ऊपर घमण्ड करेगा। 11:22-23 में वह एक बार फिर अपनी सेवकाई की पहचान के चिन्ह देने के लिए आगे बढ़ता है।

बेशक मसीह की सेवकों के रूप में अपनी पहचान के चिन्हों पर घमण्ड करना अच्छा नहीं है। 2 कुरिन्थियों के बारह में शायद ही पौलुस ऐसी व्यक्तिगत सफाई देता हो। वास्तव में ऐसे मामलों पर चर्चा करना वह स्पष्ट रूप से खामोश है। वह इस बातचीत को "मूर्खता" कहता है और निष्कर्ष निकालता है कि वह मूर्खों का खेल-खेल रहा हैं वह कहता है, "यदि तुम मेरी थोड़ी सी मूर्खता सह लेते तो क्या ही भला होता" (11:1)। वह यह भी कहता है, "इस बेधड़क घमण्ड में जो कुछ मैं कहता हूं वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार नहीं पर मानों मूर्खता से ही कहता हूं" (11:17)। इसलिए सामान्य परिस्थितियों में अपनी प्राप्तियों में घमण्ड करना पूरी तरह से असंगत है। पौलुस के शब्दों में, ऐसा घमण्ड मूर्खों के लिए है।

तो फिर घमण्ड के लिए अपनी घृणा के बावजूद पौलुस ने अपने आपको घमण्ड करने में शामिल करने का निर्णय क्यों किया? "घमण्ड करना तो मेरे लिए ठीक नहीं तौभी करना पड़ता है; ..." वह कहता है (12:11)। कुरिन्थी मसीहियों ने निरंतर मूर्खों की बातों पर ध्यान दिया था। वह किसी बहस में जीतने के लिए नहीं बल्कि उसने इसलिए घमण्ड किया क्योंकि कुरिन्थी लोग उलझन में थे और आसानी से गुमराह हो गए थे। व्यंग्य करते हुए वह कहता है, "क्योंकि तुम्हें कोई दास बना लेता है, या खा जाता है, या फसा लेता है, या अपने आप को बड़ा बनाता है, या तुम्हारे मुंह पर थप्पड़ मारता है, तो तुम सह लेते हो" (11:20)। यदि वे अधिक पक्के थे और मसीह के सच्चे सेवक में अन्तर करने के योग्य थे, तो उसके घमण्ड करने की आवश्यकता न होती। यदि सेवकाई के लिए अपने ढंग में वे इतने उलझन में नहीं होते तो पौलुस को घमण्ड करने की आवश्यकता न पड़ती। इस कलीसिया ने दिखा दिया था कि यह "मूर्खों को आनन्द से सहन" कर लेगी।

कुरन्थियों के साथ पौलुस की बातचीत समकालीन कलीसिया के जीवन के लिए कुछ महत्वपूर्ण सवाल खड़े करती है। यदि हम "कैफेटेरिया स्टाइल" वाले धर्म में ग्राहक हैं, तो हम ऐसी स्थिति में भी पड़ सकते हैं जैसी स्थिति में कुरिन्थुस के लोग पड़े थे। हमें सेवकाई के अलग-अलग और आपस में उलझती किसमें बताई जायेगी जिन में से हम चुन सकें और हम हर किसी के एक दूसरे के साथ उलझते "घमण्डों" को सुनेंगे। जो सवाल हमारे सामने होगा वह यह है कि हम किसे "सहन करते" हैं? पौलुस ने मूर्ख की भूमिका निभाई थी क्योंकि कुरिन्थी लोग विशेषकर मूर्खों से आकर्षित हुए थे। कलीसिया के लिए आज

महत्वपूर्ण चुनौती सही सेवकाइयों को जानना और पहचानना है और केवल ग्राहक बनने से इनकार करना है। यह संभव है कि कुरिन्थियों की तरह हम भी गलत किस्म के दावों से प्रभावित हो जाएं। हम उन सेवकाइयों से आकर्षित हो सकते हैं जो फायदा अधिक दें और बलिदान कम मांगे या असाधारण और आकर्षित करने वाली हो। एक परिपक्व कलीसिया उनके लिए अन्जान नहीं बनेगी जो केवल अपने अद्‌भुत परिणामों पर घमण्ड करते हैं।

कुरिन्थियों के साथ पौलुस की बातचीत से और सवाल खड़े होते हैं। घमण्ड करना उपयुक्त कार्य होता है और हमारे घमण्ड करने के योग्य क्या बात है? किस प्रकार का घमण्ड असंगत हैं, क्योंकि यह प्रभाव छोड़ता है कि प्राप्तियों हम ने ही की हैं। उदाहरण के लिए आंकड़े और रिकॉर्ड रखना उपयुक्त है। आंकड़ों का आकर्षण गलत कारण के लिए हो सकता है। यदि हम "अंकों को" केवल अपनी ही कलीसिया की श्रेष्ठता को साबित करने के लिए रखते हैं तो हमारा घमण्ड करना सही नहीं है।

हमारा घमण्ड करना किस काम का है? पौलुस 11:23-33 और 6:4-10 में एक उत्तर देता है। हर मण्डली पौलुस की उन बातों की सूची से जिन पर वह घमण्ड करना चाहता था लाभ उठा सकती है। हमारे अपने दावों के साथ घमण्ड की जाने वाली उसकी बातों से तुलना करना उपयोगी होगा।

## "क्या वे इब्रानी है? मैं भी हूँ" (11:22)

पौलुस अपने आलोचकों के घमण्डों से मिलाते हुए अपना उत्तर देना आरंभ करता है। "क्या वे ही इब्राहीम के वंश में हैं? मैं भी हूँ; क्या वे ही मसीह के सेवक हैं?" हमें यह पक्का पता नहीं कि "इब्रानी", "इस्राएली" और "अब्राहम के वंश" के शब्दों में क्या अन्तर किया जा रहा है। हम केवल इतना जानते हैं कि दोनों पक्ष विशुद्ध यहूदी विरासत का घमण्ड करते थे। जैसा कि पौलुस फिलिप्पियों में कहता है, शरीर पर भरोसा रखने का उसका कारण था (फिलिप्पियों 3:4)। विरासत के प्रश्नों पर वह किसी से भी मिल सकता था, यानी घमण्ड पर घमण्ड कर सकता था।

पहले तो लगता है कि पौलुस ने उन्हीं बातों पर घमण्ड करना चुना जिन पर उसके आलोचक घमण्ड करते हैं। यहूदी के रूप में उसकी विरासत उनके समान ही है। परन्तु पौलुस विषय को लटका देता है। 11:22-33 में वह यह प्रमाण दिखाने के लिए कि वह "मसीह का सेवक" है विषय को बदल देता है (11:23)। स्पष्टतया पौलुस उनके घमण्डों को विरासत के आधार पर मिला सकता था, परन्तु वह ऐसा न करना चुनता है (जैसे कि 12:1-10 में हैं)। ये सभी लाभ "मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण" अब हानि लगते हैं (फिलिप्पियों 3:8)।

कई बार हम ऐसी चीजों पर घमण्ड करते हैं जो तुलनात्मक रूप में इतनी बढ़िया नहीं होती। हम उस महत्वपूर्ण भूमिका की बात कर सकते हैं जो हमारे परिवार ने सदा से माना है, अपनी मण्डली के शानदार इतिहास, या उन प्राप्तियों की जो हम ने पाई हैं। घमण्ड करने लायक इनमें कोई बात नहीं है। पौलुस इस बात को समझता है कि वह ऐसे तुच्छ घमण्डों की तुलना कर सकता है, पर इसका कोई लाभ नहीं।

## मसीही की पहचान (11:23-33; 6:4-10)

2 कुरिन्थियों में दो अलग-अलग हवालों में पौलुस अपने ही जीवन के वे तथ्य बताता है जिनसे पता चलता है वह मसीह का सच्चा सेवक है। "परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों की नाई....." (6:4)। "क्या वे ही मसीह के सेवक है? मैं उनसे बढ़कर हूं। ...." (11:23)। पौलुस यानी वह व्यक्ति जिस पर अप्रभावित या निर्बल होने का आरोप लगाया

गया, अब अपना ही बचाव करता है। परन्तु लोगों को हैरानी होती है कि वह उन्हीं बातों पर घमण्ड करता है जिनके लिए उसकी आलोचना होती है। वह जो कलीसिया का लाभ लेने के लिए "अति निर्बल" था (11:21) अब उसी बात पर घमण्ड करता है जो उसकी कमज़ोरी को दिखाती है (11:29, 30)। वास्तव में 10 से 13 अध्यायों का मुख्य शब्द "निर्बलता" है क्योंकि निर्बलता ही मसीही की पहचान है (तुलना 10:10; 12:5, 9, 10; 13:4, 9)। मसीही वह है जिसके पास अपनी कोई सामर्थ नहीं है।

पौलुस के पास अपनी निर्बलता को दिखाने के लिए अपने जीवन की घटनाओं की सूची है। हमें प्रेरितों के काम या पौलुस के अन्य पत्रों से कुछ ही घटनाओं का पता है क्योंकि उसने उन घटनाओं को तभी स्मरण किया जब उसकी सेवकाई की वैद्यता पर सवाल उठा। ये सूचियां एक बेचारे व्यक्ति का प्रभाव बताती है जो एक से एक परेशानी भरे पल में से गुजरा था।

यह देखना प्रभावशाली है जहाँ पौलुस सुझाव देता है कि उसने मसीही जीवन में श्रेष्ठता पा ली हैं। 11:23 में वह "बढ़कर" और "अधिक" "कई बार" जैसे शब्दों के साथ दोहराता है। यानी अपने जीवन के एक क्षेत्र में उसका कोई साथी नहीं था। वह कठिन काम (तुलना 6:5. 1 थिस्सलुनीकियों 2:9), कई बार जेल जाना (तुलना 6:5; प्रेरितों 16:23), मार खाना (तुलना 6:5) और ऐसे समय जब वह मरने के निकट था (तुलना 1:8711)। इन क्षणों में वह बहुत बेचारा और लाचार लगता था। वह लाचार व्यक्ति के लिए जिसे पीटा गया और मरने के लिए छोड़ दिया गया था परमेश्वर के समर्थन का कोई आश्चर्यकर्म से चिन्ह नहीं मिला। ऐसी अप्रिय घटनाओं में किसी ने परमेश्वर की सामर्थ के चिन्ह नहीं देखने थे।

पौलुस के असहायपन की बात पढ़कर यानी उन असाधारण घावों को जो उसने सहे और जीवन के कष्टदायक पलों को पढ़कर हम चकित होते हैं। सूची को पढ़ने का प्रभाव यह ध्यान देना है कि पौलुस की सेवकाई से उसे स्वास्थ्य और धन मन की शांति मिलने के बजाय पीड़ा ही मिली। शारीरिक पीड़ा के उसके चरम पलों का विवरण 11:24, 25 में है। पारमपरिक यहूदी "उन्नतालिस कोड़े" जो पौलुस को पांच बार मिले थे, पीड़ादायक और लज्जाजनक थे। छड़ियों से पीटाई करना (प्रेरितों 16:37; 22:25, 29) रोमी दण्ड था जबकि पथराव करना (तुलना प्रेरितों 14:19) अदालत का आश्रय लेने वाली भीड़ द्वारा किया जाता था। पौलुस जहाँ भी गया उसने लोगों में एक ऐसी हलचल मचा दी जिस कारण अधिकारियों और क्रूद्ध भीड़ द्वारा उसकी अपमानजनक पीटाई की गई। गलातियों 6:17 के सुझाव के अनुसार, पौलुस अपने शरीर पर युद्ध के चिन्ह "यीशु के दागो" को लिए फिरता था।

समुद्र के जोखिमों और भीड़ के वास्तविक खतरों के अलावा और परेशानी के लगातार खतरे थे। 11:26 में "जोखिमों" शब्द भौतिक संकटों की विभिन्नता को दिखाने के लिए कई बार दोहराया गया है। यह खतरे सफर के साथ उस युग में थे जब यात्रियों को प्रकृति ("नदियों से खतरों") और घूम रहे डाकुओं से खतरे का सामना करना पड़ता था। यह खतरा वास्तविक परेशानी जैसा ही हो सकता है।

कठिनाइयां पक्का वेतन न होने, अयोग्यता या बेरोजगारी के लाभों के न होने से भी आई होंगी। अपने व्यवसाय को पीछे छोड़कर और हमेशा कभी कबार दूसरों से मिलने वाले उपहारों पर निर्भर रहकर पौलुस ने भूख और प्यास, जाड़े और उगाड़े रहने का सामना किया (11:27)। उसने स्वेच्छा से असाधारण असुरक्षाओं को स्वीकार किया क्योंकि उसे भरोसा था कि परमेश्वर उपाय करेगा। सेवकाई मे परमेश्वर के हाथ में अपना जीवन देने के लिए जीवन के स्तर को बलिदान करने का निर्णय भी शामिल था। उसने "किसी भी और हर परिस्थिति में" "हर एक बात और सब दिशाओं में मैंने तृप्त होना, भूख रहना, और बढ़ने"

का भेद सीखा था (फिलिप्पियों 4:12)। पहले 2 कुरिन्थियों में उसने कहा था, "शोक करने वाले के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं; कंगालों के जैसे हैं, परन्तु बहुतों को धनवान बना देते हैं" (6:10)। सेवकाई में व्यक्तिगत आर्थिक सुरक्षा तथा सम्पत्ति के जोखिम थे जिन्हें नापा जा सकता था।

पौलुस की शारीरिक स्थिति ग्राहक प्रधान जनता के लिए विज्ञापन नहीं था। उसके जैसी मसीहियत ने उसे बहुत परेशानी में डाल दिया था। सबसे अधिक लाभ देने वालों के लिए खरीदारी करने वाला कोई व्यक्ति मसीहियत के इस रूप से आकर्षित नहीं हुआ होगा।

---

# हमारा परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है

## जेम्स ई. प्रीस्ट

किसी न किसी तरह शक्ति, विशेषकर असीमित शक्ति की अभिव्यक्ति पर विचार किए बिना सोचना हमारे लिए कठिन है। शक्ति का हमें मुख्यत: इसके प्रभाव से पता चलता है। शक्ति का इस्तेमाल ही शक्ति प्रदर्शन है। मनुष्य चाहे उनके पास सीमित शक्ति हो, शक्ति का अप्रकट कवच भी रखते हैं और विभिन्न प्रकार से इसका इस्तेमाल करते हैं। बिजली की गरज में पाई जाने वाली ऊर्जा का इस्तेमाल घरों तथा नगरों में प्रकाश के लिए किया जाता है। अणु में पाई जाने वाली शक्ति ऊर्जा के स्रोत में इस्तेमाल की जाती है। पेट्रोलियम की शक्ति को किसी वाहन के इंजन में डालने से हम कहीं आ-जा सकते हैं ये उदाहरण काफी प्रभावी है। अपने संसार में शक्ति के इन प्रयोगों से हम सब प्रभावित होते हैं।

शक्ति के ये उदाहरण वास्तव में उस शक्ति के इस्तेमाल के बारे में हैं जो पहले से ही वर्तमान है। लोग उस शक्ति को खोजते, बनाते, नियंत्रित और इसका इस्तेमाल करते हैं जो पहले से ही हमारे संसार में अप्रकट है। इससे हमारे संसार की प्रकृति और स्रोत का कुछ संकेत मिलता है। यह बड़े ही नियमित ढंग से नियंत्रि की गई आश्चर्यजनक शक्ति से चल रहा हैं और हमारे भौतिक संसार को बनाने वाले अणु मूलत: ऊर्जा के साथ बहते हैं। यदि उन्हें विखण्डन या गलन की प्रक्रियाओं में अस्त-व्यस्त कर दिया जाए, तो अकल्पनीय शक्ति के रूप में एक बहुत बड़ी अव्यवस्था फैल जाएगी।

इस सब का परमेश्वर से क्या संबंध है? अपने पहले खण्ड "परमेश्वर की असीमितता" में हमने परमेश्वर की सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता और सर्वशक्तिशालिता पर चर्चा की थी। सबसे शक्तिशाली होने के कारण, परमेश्वर में रचना करने की शक्ति है। शक्ति कार्य करने से दिखाई जाती है। परमेश्वर सब कुछ जानता है, इसलिए उसकी सृष्टि "उसकी कल्पना के अनुसार" ही है। यह वैसी ही है जैसी वह चाहता है हर जगह होने के कारण, परमेश्वर अन्तर्यामी है। उसने संसार की रचना करके अपने आपको प्रकट कर दिया है। इसलिए सृष्टि में हमें परमेश्वर का ही स्वभाव दिखाई देता है। पवित्र शास्त्र का दृष्टिकोण यही है, "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:1)। इसी कारण भजन लिखने वाला पुकार उठा था "हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है।....."

(भजन 8:1; आयत 9 भी देखिए)। हमारी पृथ्वी परमेश्वर की सृजनात्मकता का विशाल प्रदर्शन है। क्यों? सृष्टि स्वयं परमेश्वर के सृजनात्मक स्वभाव तथा शक्ति की सुव्यवस्थित अभिव्यक्ति है। पहले खण्ड में हमने संक्षेप में उसके सृजनात्मक कार्य की व्यापकता का सुझाव दिया था। इस खण्ड में हम परमेश्वर की सृष्टि में पृथ्वी व मनुष्य के महत्व तथा भूमिका पर जोर देंगे।

**पृथ्वी से बनाया गया**

हमें बताया गया है कि "यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और आदम जीवता प्राणी बन गया" (उत्पत्ति 2:7)। हमारी "रचना" अर्थात शारीरिक बनावट, इस पृथ्वी से है, इसलिए हमारा और पृथ्वी का आपस में बहुत गहरा संबंध है। भौतिक अस्तित्व होने के कारण हमारा बनाने वाला एक ही है और हमें एक जैसे तत्वों से बनाया गया है। भौतिक जीव होने के कारण, हम पृथ्वी से हैं, पृथ्वी पर रहते हैं, और पृथ्वी में लौट जाते हैं (उत्पत्ति 1:29; 2:9, 16; 3:17-19)। इसलिए, कहा जा सकता है कि परमेश्वर ने अपनी सृजनात्मक बुद्धि से, अपने भौतिक मानवीय जीव को अपनी भौतिक सृष्टि अर्थात पृथ्वी के साथ जोड़ा है। इसलिए पृथ्वी हमारे रहने के लिए संदर्भ बन गई।

पृथ्वी पर इस जीवन को कम से कम चार विशेष ढंगों से विकसित किया गया था। पहला, परमेश्वर जानता था कि मनुष्य के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं है। उसने उसके लिए उसके जैसी ही एक सहायक बनाई और पुरुष और स्त्री में एक गूढ़ संबंध बना दिया। उसने उन्हें करने के लिए काम दिया। तीसरा, परमेश्वर ने जीवन के दूसरे रूपों पर उन्हें प्रभुता देकर उनके जीवन को समृद्ध बनाया। और सबसे अधिक महत्वपूर्ण, परमेश्वर ने उसे अपने साथ संगति की अनुमति दी।

कितना सौभाग्य हैं मनुष्य के लिए और यह कितने आनन्द की बात है। कितना अच्छा विचार है। यह हो कैसे गया? यह क्यों हुआ? इस विषय पर तीसरे खण्ड "हमारे साथ परमेश्वर का संबंध" में विस्तार से चर्चा की जाएगी। परन्तु, अभी हमारे सामने काफी बड़ी चुनौती है।

**उसके स्वरूप में बनाया गया**

बाइबल में बड़ी सावधानी से लिखा गया है कि "परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्य की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:27)। "परमेश्वर ने.... उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया" (उत्पत्ति 2:7)। नेफेश एक इब्रानी शब्द है जिसमें काफी सूक्ष्म भेद हैं। क्योंकि यहाँ पर संदर्भ परमेश्वर द्वारा मनुष्य की रचना है, इसलिए इसका अर्थ "प्राणी, सम्पूर्ण व्यक्ति" से अधिक है।

इसलिए, हम पाते हैं कि हम "पृथ्वी के" ही नहीं है। हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए "सम्पूर्ण जीव" हैं। परमेश्वर का सार आत्मा है, सो हमारा परमेश्वर के स्वरूप पर होना निश्चय ही भौतिक रूप नहीं है। हमारा परमेश्वर के स्वरूप पर होना शरीर पर नहीं बल्कि आत्मा पर आधारित है। जब परमेश्वर ने मनुष्य में जीवन का

श्वास फूंका, तो उसे परमेश्वर का सार अर्थात उसका आत्मा मिल गया।

यद्यपि, सभी जीवों, पक्षियों आदि में भी वह है जिसे उत्पत्ति 1:30 में "जीवन का प्राण" कहा गया है। दोनों की व्यापकता या गुण में अंतर हो सकता हैं बाइबल कहती है, "मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है" (नीतिवचन 20:27)। मानवीय जीव ज्ञान पाने, निष्कपटता, और सचेत होने में सामर्थ है। आदम और हव्वा विवेकी, विचारवान अपने आप और अपने आस-पास के वातावरण और परमेश्वर को जानते थे। यद्यपि उन्हें पृथ्वी की वस्तुओं की से बनाया गया था, परन्तु उन्हें भौतिक अस्तित्व से बढ़कर परमेश्वर की ओर से दिए गए आत्मा के बहुमूल्य दान से और महत्व दिया गया था। इससे उनके लिए परमेश्वर के साथ सार्थक संबंध बनाना संभव हो गया।

सृष्टिकर्त्ता तथा मनुष्य के बीच यह संगति सचमुच बड़ी सुखमय थी। अदन की वाटिका एक ऐसी जगह थी जो बिना किसी रूकावट के सदा तक रहने वाले स्वर्ग जैसे सुख की पक्की मित्रता थी (उत्पत्ति 2:7, 8)। इस संबंध में खत्म न होने वाले आनन्द की शक्ति थी। हम अनन्त आनन्द के लिए "शक्ति" कहते है क्योंकि बाइबल स्कूल में शिक्षा पाने वाला प्रत्येक बच्चा जानता है कि इसके बाद कुछ दुखद बात हुई। आदम और हव्वा को वाटिका से बाहर निकाल दिया गया। उन्हें मृत्यु दण्ड मिला था। उन्हें परिश्रम करने तथा पीड़ा सहने का शाप मिला था। अब से उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति की महिमा का साथ नहीं मिलना था।

क्यों? क्योंकि बाग-ए-अदन में "...जीवन के वृक्ष.... और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष" थे (उत्पत्ति 2:9ख)। परमेश्वर ने कहा था, "....भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा" (उत्पत्ति 2:17)। परमेश्वर ने बाग में वह वृक्ष क्यों रखा था? उसने पुरुष तथा स्त्री के लिए केवल "जीवन का वृक्ष" (उत्पत्ति 2:9) ही उपलब्ध करवाकर अपने साथ उनके संबंध को संतोषजनक क्यों न बनाए रखा?

ये प्रश्न जटिल लग सकते हैं। परन्तु सावधानी से विश्लेषण करने पर इनका संतोषजनक उत्तर मिल जाता है। हमने संसार को इसकी व्यापकता में देखा है। हमने संसार के आश्चर्यों पर ध्यान दिया है। यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है कि केवल एक ही प्राणी के लिए कहा गया है कि "परमेश्वर ने मनुश्य को अपने स्वरूप पर बनाया।" परमेश्वर द्वारा उपलब्ध करवाया गया मनुष्यों के लिए यह अच्छा संदर्भ कि वे परमेश्वर की समानता में हैं और परमेश्वर उनके साथ बातचीत करने का इच्छुक है, संकेत देता है कि उनकी रचना परमेश्वर के लिए विशेष महत्व रखती थी। यही प्राणी अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ आत्मचेतन और उसकी बात मानने वाली बातचीत में योगदान कर सकते थे। बिना बाधा के, परमेश्वर के साथ सीधे संगति की कल्पना करे।

### अपनी पसंद चुनने के लिए बनाया गया

इस संबंध में अनंत तक बने रहने के लिए केवल एक ही बात आवश्यक थी कि यह संबंध मनुष्य और परमेश्वर में अपनी पसंद चुनने की स्वतंत्रता से हो। इसमें स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय लेने की छूट हो। स्वतंत्रतापूर्वक अपनी पूर्ण व्यक्त करने के लिए स्वीकारने तथा नकारने की योग्यता तथा अवसर हो। परमेश्वर ने आदम और

हव्वा को योग्यता (बुद्धि) और अवसर (वृक्ष) उपलब्ध करवाया। परमेश्वर ने उन्हें उसकी इच्छा को मानने या उसका उल्लंघन करने की खुली छूट दी। परमेश्वर और उसकी मानवीय सृष्टि के बीच परस्पर शर्त के बिना ऐसा नहीं हो सकता था।

आदम और हव्वा द्वारा गलत चुनने से, परमेश्वर की सृष्टि पाप, जुदाई, श्रापों, पीड़ा, कांटों, क्रूरूपता और मृत्यु से बिगड़ गई। क्या सृष्टि की रचना करने का परमेश्वर का शानदार कार्य असफल हो गया था? नहीं। परमेश्वर का कार्य चलता रहता है। उसने सर्प (शैतान) को श्राप दिया जिसके कारण यह गिरावट आई थी और आज्ञा तोड़ने के द्वारा पाप में गिर चुकी मनुष्य जाति को फिर से अपने साथ मिलाने की प्रतिज्ञा की:

तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, तू ने जो यह किया है इसलिए तू सब घरेलू पशुओं, और सब बनैले पशुओं से अधिक शापित है; तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:14, 15)।

---

# मैं मसीह की कलीसिया का सदस्य क्यों हूँ? क्योंकि इसे पवित्र शास्त्र की नींव पर बनाया गया था

## लिरॉय ब्राउनलो

**1. अच्छी नींव का महत्व**

1. यह एक माना हुआ तथ्य है। कि कोई इमारत या संस्थान उस आधार से जिस पर यह टिका है, अधिक मजबूत नहीं हो सकता। दोनों की मजबूती का आधार नींव ही होता है। नींव से बड़ा बनाया गया घर अधिक देर नहीं टिक सकता। कलीसिया भी इसका कोई अपवाद नहीं है, इसकी स्थिरता और इससे मिलने वाले लाभ इसकी नींव पर ही निर्भर करते हैं।

2. पवित्र शास्त्र के अनुसार कलीसिया की नींव पवित्र शास्त्र ही होनी चाहिए, वरना यह पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं होगी। इसलिए पवित्र शास्त्र की नींव पर बनी कलीसिया का सदस्य हुए बिना कोई मनुष्य पवित्र शास्त्र के अनुसार कलीसिया की सदस्यता का दावा नहीं कर सकता।

**2. पत्थर या नींव क्या है**

1. पत्थर की पहचान सुनिश्चित करने के लिए उस अंगीकार को सुनिश्चित करना आवश्यक है, जिसकी यह बात करता है। पतरस ने अभी-अभी अंगीकार किया था, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती 16:16)। यीशु ने तुरन्त पतरस का अंगीकार किया, "मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है...." फिर मसीह ने इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा की। इसलिए यह

पत्थर या तो मसीह द्वारा पतरस का अंगीकार है या पतरस द्वारा मसीह का अंगीकार। बहुत से लोगों के मन में डाला गया है कि यह पतरस के लिए कहा गया है, क्योंकि "पतरस" शब्द का अर्थ चट्टान या पत्थर है। परन्तु दो अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल होने के कारण मूल भाषा हमें यह व्याख्या करने की अनुमति नहीं देती, "तू पतरस (पैट्रॉस) है और मैं इस पत्थर (पैट्रा) पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा" (मत्ती 16:18)। इस प्रकार यीशु ने अपनी कलीसिया पतरस (पैट्रॉस) पर नहीं, बलिक पत्थर (पैट्रा या चट्टान) पर बनाने की प्रतिज्ञा की, बड़ा और महिमा से भरा तथ्य यह है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है। इसलिए प्रभु की कलीसिया मानवीय देह की निर्बलता पर नहीं, बल्कि मसीह की ईश्वरीयता तथा परमेश्वर का पुत्र होने पर बनी है।

2. दूसरे पद इस व्याख्या का समर्थन करते हैं: (1) "क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता" (1 कुरिन्थियों 3:11)। (2) "और प्रेरितों ओर भविष्यवक्ताओं की नींव पर, जिसके कौने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो" (इफिसियों 2:20)। (3) "राजमिस्त्रयों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था, वही कौने का सिरा हो गया है" (भजन संहिता 118:22)। यीशु ने इस भविष्यवाणी को अपने ऊपर लागू किया (मत्ती 21:42)। पतरस ने भी इसे मसीह पर लागू किया (प्रेरितों के काम 4:11)। यह प्रमाण जबर्दस्त है।

**3. वह नींव बनी रहेगी**

1. यह शानदार आधार कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है, कायम है, और रहेगा भी। विरोध के दुर्भावनापूर्ण और मिले-जुले आक्रमण इसे कमजोर नहीं कर पाए हैं। नास्तिक, आधुनिकतावादी और अविश्वासी जोर-जोर से उपदेश देते और प्रलाप करते हैं, पर मसीह जीवते परमेश्वर का पुत्र ही रहता है। इस पत्थर की तुलना सचमुच उस अहरन से की जा सकती है, जिस पर बहुत हथौड़े बजते हैं। यह आधार आज भी उतना ही सुरक्षित और दृढ़ है, जितना पहले था।

2. अब हम एक विरोधात्मक उदाहरण पर ध्यान देते हैं: वोल्टेयर ने एक बार शेखी मारी थी कि सौ साल बाद पृथ्वी पर बाइबल की एक भी प्रति नहीं होगी। सौ से अधिक वर्ष बीत गए हैं, जब परमेश्वर की निंदा करने वाली यह भविष्यवाणी दी गई थी, और अभी तक यह वैसे ही है, पूरा होने का नाम ही नहीं लेती। उसी छापेखाने का इस्तेमाल जहाँ यह नास्तिक भविष्यवाणी जारी हुई थी, अब जिनेवा बाइबल सोसायटी द्वारा किया जा रहा है। कैसी भविष्यवाणी है यह!

3. पर मनुष्यों पर बनाए गए संस्थानों का क्या होगा? वे रेत पर खड़े हैं, अर्थात उनकी नींव कमजोर है जिस कारण अन्त में गिर जाएंगे। मसीह की कलीसिया विजयी होकर निकालेगी, क्योंकि यह एक परखे हुए पत्थर और पक्की नींव पर टिकी है।